1 ध्वनि

• सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्याएँ एवं अर्थग्रहण संबंधी प्रश्नोत्तर

1. अभी न होगा मेरा अंत
अभी-अभी ही तो आया है
मेरे वन में मृदुल वसंत—
अभी न होगा मेरा अंत।
हरे-हरे ये पात,
डालियाँ, कलियाँ, कोमल गात।
मैं ही अपना स्वप्न-मृदुल-कर
फेरूँगा निद्रित कलियों पर
जगा एक प्रत्यूष मनोहर।

(पा.पु.पृ. 1)

कठिन-शब्दार्थ—वन = जंगल। मृदुल = कोमल। अंत = समाप्ति। पात = पत्ते। कोमल = मुलायम। गात = शरीर। कर = हाथ। निद्रित = नींद में, सोई हुई। प्रत्यूष = प्रात:काल। मनोहर = सुंदर, मन को मोहने वाला।

संदर्भ एवं प्रसंग—प्रस्तुत काव्य-पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक 'वसंत' में संकलित, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' द्वारा रचित 'ध्वनि' नामक कविता से ली गई हैं। प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि ने उनके काव्य-जीवन का अंत समझने वाले आलोचकों को कड़ा जवाब देते हुए देश की युवा पीढ़ी को जगाने का प्रयास किया है।

व्याख्या—कवि आत्मविश्वास के साथ अपने आलोचकों को, जो ये मानते हैं कि कवि का कवित्व अब प्रभावशाली नहीं रहा है और उनका कवि जीवन अब समाप्त होने वाला है, प्रत्युत्तर देते हुए कहते हैं कि उनके जीवनरूपी उपवन में अभी भावनाओं और कल्पनाओंरूपी वसंत का आगमन हुआ है। जिस प्रकार वसंत के आगमन से प्रकृति का वातावरण संगीतमय हो उठता है, चारों ओर मनमोहक और परिवर्तित प्रकृति दिखाई देती है, ठीक उसी प्रकार उसके मन में भी आशा और उमंग का संचार हुआ है, जो उनकी कविताओं के माध्यम से प्रकट होगा, जिसका अंत कभी भी संभव नहीं है। साथ ही कवि आलस्य और निद्रा में खोए हुए तथा अपने पथ से भटके हुए युवाओं को भी प्रेरित करेगा। जैसे वसंत में प्रत्येक पत्ता हरा, डालियाँ कोमल और कलियाँ अधखिली होती हैं और वसंत उन कलियों को अपने सपनों जैसे मधुर और कोमल हाथों से जगाकर नए सवेरे का आरंभ करता है, उसी प्रकार कवि भी अपनी कविता के नए-नए ओजस्वी विषयों के माध्यम से युवाओं में उत्साह का संचार करके उन्हें आलस्य से जगाकर व सही मार्ग पर लाकर, एक नई आशा से परिपूर्ण भविष्य का निर्माण करेगा, जिससे वे सुपथ पर अग्रसर हो सकें।

1. प्रस्तुत काव्यांश के माध्यम से कवि ने किन लोगों को करारा जवाब दिया है?
2. कवि ने ऐसा क्यों कहा है कि अभी उसका अंत नहीं होगा?
3. 'वन' और 'निद्रित कलियाँ' यहाँ किसके प्रतीक हैं?
4. कवि अपनी रचनाओं द्वारा किनको उत्साहित करना चाहता है?

उत्तर—(1) प्रस्तुत काव्यांश के माध्यम से कवि ने ऐसे लोगों को करारा जवाब दिया है, जो मानते हैं कि कवि का कवित्व अब प्रभावशाली नहीं रहा और उनके कवि-जीवन का अंत होने वाला है। (2) कवि ने ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि उसके कवि जीवन में अभी नई आशा और उत्साह का संचार हुआ है। उसे नए-नए भावों को व्यक्त करने का अवसर मिला है। अब वह अपनी कविताओं द्वारा युवाओं के हृदय में आशा और उत्साह का संचार करेगा। (3) यहाँ 'वन' कवि के जीवनरूपी उपवन का तथा 'निद्रित कलियाँ' आलस्य में डूबे हुए नवयुवकों का प्रतीक हैं। (4) कवि अपनी रचनाओं द्वारा युवा पीढ़ी को उत्साहित करना चाहता है।

2. पुष्प-पुष्प से तंद्रालस लालसा खींच लूँगा मैं,
अपने नव जीवन का अमृत सहर्ष सींच दूँगा मैं,
द्वार दिखा दूँगा फिर उनको।
हैं मेरे वे जहाँ अनंत—
अभी न होगा मेरा अंत।

(पा.पु.पृ. 1)

कठिन-शब्दार्थ—पुष्प = फूल। तंद्रालस = आलस्य और नींद। लालसा = इच्छा। नव = नवीन, नया। सहर्ष = प्रसन्नता के साथ। द्वार = दरवाजा। अनंत = जिसका अंत न हो (ईश्वर)।

संदर्भ एवं प्रसंग—प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'वसंत' में संकलित सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' द्वारा रचित 'ध्वनि' नामक कविता से लिया गया है। उपर्युक्त पंक्तियों में कवि ने युवाओं के आलस्य को दूर करके उनमें नव चेतना का संचार करने की बात कही है।

व्याख्या— कवि कहता है कि जैसे वसंत बंद कलियों से आलस्य खींचकर उन्हें खिला देता है और उनमें अपना अमृत रस डालकर नव जीवन का संचार करता है। उसी प्रकार वह भी युवाओं के मन से आलस्य की भावना को दूर करके, उनके जीवन को आशा और उत्साह से भर देगा। वह अपनी कविताओं के द्वारा अनंत परमात्मा तक पहुँचने का मार्ग दिखाएगा। उसे पूरा विश्वास है कि वह अभी बहुत समय तक अपनी रचनाओं से समाज का मार्गदर्शन करता रहेगा।

1. पुष्प का उदाहरण कवि ने किसके लिए और क्यों दिया है?
2. 'अपने नव जीवन का अमृत' कवि ने किसे कहा है?
3. 'द्वार दिखा दूँगा' से कवि का क्या आशय है?
4. ''अभी न होगा मेरा अंत'' कवि का यह कथन उसकी किस विशेषता का परिचय कराता है?

उत्तर—(1) पुष्प का उदाहरण कवि ने अलसाए और अपने मार्ग से भटके हुए युवकों के लिए दिया है। कवि उन्हें जगाकर उनमें आशा और उत्साह का संचार करना चाहता है। (2) 'अपने नव जीवन का अमृत' कवि ने अपने कवित्व और कविता के ओजस्वी विषयों को कहा है जिनके माध्यम से वह युवाओं को प्रेरित करना चाहता है और उन्हें उज्ज्वल भविष्य की ओर अग्रसर करना चाहता है। (3) द्वार दिखाने से कवि का आशय सुपथ से है, जिस पर चलकर युवा अपने उद्देश्य को प्राप्त कर सकें और अपने जीवन को सार्थक बना सकें। (4) इस कथन से ज्ञात होता है कि कवि में आत्मविश्वास और परोपकार की भावनाएँ हैं।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

कविता से

प्रश्न 1. कवि को ऐसा विश्वास क्यों है कि उसका अंत अभी नहीं होगा ?

उत्तर– कवि को ऐसा विश्वास इसलिए है कि अभी उसके जीवन में काफी उत्साह और ऊर्जा है । वह आत्म- विश्वास से भरा हुआ है । वह युवा-पीढ़ी को आलस्य से उबारना चाहता है । चूँकि कवि के जीवन में वसंत का आगमन हुआ है । अत: वह वसंत की तरह युवाओं के मन को जीवनरूपी अमृत से सींचकर हरा-भरा कर देना चाहता है ।

प्रश्न 2. फूलों को अनंत तक विकसित करने के लिए कवि कौन-कौन-सा प्रयास करता है ?

उत्तर– फूलों को अनंत तक विकसित करने के लिए कवि उन्हें कलियों की स्थिति से निकालकर खिला हुआ देखना चाहता है । उसे विश्वास है कि वह कलियों पर वासंती स्पर्शभरा हाथ फेरकर उन्हें पुष्पित कर देगा । दूसरे शब्दों में कवि अपनी काव्य रचना से युवकों को उज्ज्वल भविष्य का दरवाजा दिखा देने की बात करता है ।

प्रश्न 3. कवि पुष्पों की तंद्रा और आलस्य दूर हटाने के लिए क्या करना चाहता है ?

उत्तर– कवि पुष्पों की तंद्रा और आलस्य दूर करने के लिए उन पर वसंत जैसा कोमल स्पर्श भरा हाथ फेरना चाहता है और उन्हें खिला देना चाहता है । जो काम वसंत करता है वही काम कवि करना चाहता है । बिना खिली हुई कलियाँ आलस्य में पड़े युवाओं की प्रतीक हैं। वह उनके आलस्य को दूरकर नए और मनोहर प्रभात का संदेश देना चाहता है ।

कविता से आगे

प्रश्न 1. वसंत को ऋतुराज क्यों कहा जाता है ? आपस में चर्चा कीजिए ।

उत्तर– भारत में एक साल में छ: ऋतुएँ होती हैं । इन सबका अपना अलग-अलग महत्त्व है । इनमें वसंत ऋतु सबसे निराली और विचित्र है । इसे सर्वश्रेष्ठ ऋतु माना जाता है । इस ऋतु में प्रकृति पूरे यौवन पर होती है । इस ऋतु में पेड़ों पर नए पत्ते आ जाते हैं । यह ऋतु स्वास्थ्यवर्धक भी होती है । चारों ओर खिले फूल, आम के बौर की मादक महक, कोयल की मधुर कूक और सरसों के फूल इस ऋतु को उमंग से भर देते हैं । इन्हीं विशेषताओं के कारण वसंत को ऋतुराज कहा जाता है ।

प्रश्न 2. वसंत ऋतु में आने वाले त्योहारों के विषय में जानकारी एकत्र कीजिए और किसी एक त्योहार पर निबंध लिखिए।

उत्तर — वसंत ऋतु में मुख्यत: वसंत पंचमी, महाशिवरात्रि तथा होली के त्योहार मनाए जाते हैं। वसंत पंचमी के दिन विद्या की देवी माँ सरस्वती की पूजा की जाती है। महाशिवरात्रि पर भगवान शिव की पूजा-अर्चना और यज्ञ-हवन आदि किया जाता है। इस अवसर पर मेलों का भी आयोजन किया जाता है।

होली

भारत त्योहारों का देश है, जिसमें होली रंगों भरा मौज-मस्ती का, उत्साह और उमंगों का त्योहार है। जिस प्रकार प्रकृति सदैव एक ही रंग में नहीं बँधती अपितु विभिन्न ऋतुएँ प्रकृति को अपने रंग में रँगती रहती हैं, वैसे ही उल्लास, उमंग, संगीत और नृत्य के साथ होली के रूप में वसंत ऋतु चारों

ओर गुलाल बिखेर देती है। इसके आगमन पर मनुष्य तो क्या प्रकृति भी इठला उठती है। किसान अपनी फसल को हरा-भरा देखकर फूला नहीं समाता।

पौराणिक दृष्टि से इस उल्लासमय त्योहार का संबंध दैत्यराज हिरण्यकशिपु, उसके पुत्र प्रह्लाद और बहन होलिका की कथा से जुड़ा हुआ है। हिरण्यकशिपु ने वरदान प्राप्त करके स्वयं को भगवान घोषित कर दिया और अपनी पूजा करवानी आरंभ कर दी। उसका पुत्र प्रह्लाद विष्णु भक्त था, जबकि हिरण्यकशिपु विष्णु को अपना परम शत्रु मानता था। यही अंतर पिता-पुत्र के वैमनस्य का कारण बना। हिरण्यकशिपु ने प्रह्लाद को विष्णु की आराधना करने के लिए मना किया, किन्तु वह नहीं माना। प्रह्लाद को विष्णु की भक्ति करने से रोकने के लिए दैत्यराज हिरण्यकशिपु ने उसे अनेक यातनाएँ दीं, किंतु प्रह्लाद ने अपना निश्चय नहीं बदला। फिर हिरण्यकशिपु ने अपने पुत्र को जला देने की बात सोची। हिरण्यकशिपु की बहन होलिका को अग्नि से वरदान मिला हुआ था कि वह आग से नहीं जलेगी। फलतः वह प्रह्लाद को गोद में लेकर लकड़ियों के ढेर पर बैठ गई, लेकिन होलिका जलकर मर गई और प्रह्लाद बच गया। तब से होलिका को जलाने की परम्परा चली आ रही है।

होली का त्योहार फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। इन दिनों शिशिर का अंत और वसंत का आरंभ होने को होता है। प्रातःकाल होली-पूजन होता है तथा सायंकाल होलिका दहन होता है। चने और गेहूँ या जौ की बालें होलिका की आग में भूनते हैं। होलिकादहन के समय लोग इस भुने अनाज को एक-दूसरे को देते हैं और गले मिलते हैं। नववधुएँ विशेष रूप से होली-पूजन करती हैं।

होली के दूसरे दिन 'धुलेंडी' मनाई जाती है। इस दिन एक दूसरे के ऊपर रंग डाला जाता है। प्रातःकाल से ही बालक-बालिकाएँ, युवक-युवतियाँ, वृद्ध सभी एक-दूसरे को रंग और गुलाल लगाने लगते हैं। पिचकारियों से निकले रंग सभी का तन-मन भिगो देते हैं। चारों ओर हँसी-ठहाके, उत्साह, उमंगों से आनंद का वातावरण बन जाता है। विश्वभर में ऐसा त्योहार और कहीं नहीं मनाया जाता है।

इस अवसर पर लोग एक-दूसरे से गले मिलते हैं। एक-दूसरे के घर जाते हैं जहाँ उनका स्वागत मीठे पकवानों से किया जाता है। गाँव-देहातों में महीने भर पहले से होली के उत्सव की तैयारियाँ शुरू हो जाती हैं। होली के अवसर पर कवि सम्मेलन तथा नृत्य आदि के कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

वर्तमान युग में इस त्योहार में कुछ कुरीतियाँ भी शामिल हो गई हैं। रंग खेलते हुए कालिख या बदबूदार कीचड़ मुख पर मल देना, रास्ते में जाते हुए लोगों पर गंदगी फेंकना, बसों, कारों पर रंग भरे गुब्बारे फेंकना, होली के बहाने गलत व्यवहार करना-ये सब कोई भी सभ्य व्यक्ति सहन नहीं कर सकता। कुछ लोग नशे में धुत होकर अश्लील-हरकतें करने से बाज नहीं आते हैं। इन्हीं कुरीतियों के चलते त्योहार की पवित्रता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

होली आपसी मेल-मिलाप और भाईचारे का त्योहार है। इसे इसी भावना से मनाना चाहिए। यह त्योहार समस्याओं से ग्रस्त दैनिक जीवन को ताजगी भरे नए रंगों से भर देता है।

प्रश्न 3. ''ऋतु परिवर्तन का जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है'' इस कथन की पुष्टि आप किन-किन बातों से कर सकते हैं ? लिखिए।

उत्तर- ऋतु परिवर्तन का हमारे जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है । हमारे खान-पान, पहनावे एवं स्वास्थ्य आदि इससे प्रभावित होते हैं । ऋतुओं के अनुसार ही लोग भोजन में खाद्य वस्तुओं को शामिल करते हैं, जैसे - सर्दियों में गर्म वस्तुओं और गर्मी में शीतलता प्रदान करने वाली वस्तुओं का सेवन किया जाता है । इसी प्रकार हर ऋतु में अलग-अलग प्रकार के वस्त्रों का प्रयोग किया जाता है । जैसे - सर्दियों में गर्म वस्त्रों का, गर्मी में सूती-वस्त्रों का और वर्षा में बरसात से बचाने वाले वस्त्रों का अधिक प्रयोग होता है । ऋतुओं के अनुसार मनाए जाने वाले त्योहार भी लोगों के जीवन को गहराई से प्रभावित करते हैं । कुछ ऋतुएँ स्वास्थ्य की दृष्टि से अच्छी मानी जाती हैं, जैसे - शरद और वसंत ऋतु । वर्षा ऋतु जीवन में उल्लास लेकर आती है । अच्छी वर्षा से फसल भी अच्छी होती है ।

अनुमान और कल्पना

प्रश्न 1. कविता की निम्नलिखित पंक्तियाँ पढ़कर बताइए कि इनमें किस ऋतु का वर्णन है ?

फूटे हैं आमों में बौर,
भौंर वन-वन टूटे हैं।
होली मची ठौर-ठौर,
सभी बंधन छूटे हैं।।

उत्तर- कविता की उपर्युक्त पंक्तियों में वसंत ऋतु का वर्णन है । वसंत ऋतु में होली का त्योहार मनाया जाता है । आम के वृक्षों में बौर आने लगते हैं जिन पर मंडराते भौंरों का गुंजन कर्णप्रिय होता है ।

प्रश्न 2. स्वप्न भरे कोमल-कोमल हाथों को अलसाई कलियों पर फेरते हुए कवि कलियों को प्रभात के आने का संदेश देता है, उन्हें जगाना चाहता है और खुशी-खुशी अपने जीवन के अमृत से उन्हें सींचकर हरा-भरा करना चाहता है । फूलों-पौधों के लिए आप क्या-क्या करना चाहेंगे?

उत्तर- फूलों और पौधों के लम्बे जीवन के लिए हम उन्हें पानी से सींचेंगे । समय-समय पर खाद डालेंगे और उनकी गुड़ाई करेंगे । फूलों को न तोड़ेंगे और न किसी को तोड़ने देंगे । पौधों और फूलों को प्यार भरे हाथों से स्पर्श करेंगे ।

प्रश्न 3. कवि अपनी कविता में एक कल्पनाशील कार्य की बात बता रहा है । अनुमान कीजिए और लिखिए कि उसके बताए कार्यों का अन्य किन-किन संदर्भों से सम्बन्ध जुड़ सकता है ? जैसे - नन्हे-मुन्ने बालक को माँ जगा रही हो .... ।

उत्तर– कवि के बताए कार्यों का निम्नलिखित सन्दर्भों से संबंध जुड़ सकता है- (1) प्रात:काल पिता के साथ बगीचे में गया बालक फूलों पर बैठी तितलियों को छूने या पकड़ने का प्रयास करता है । (2) वह चुग रहे पक्षियों को पकड़ने का प्रयास करता है । (3) पत्तियों और फूलों पर ओस की बूँदों को छूने का प्रयास । (4) उलझी लताओं को सावधानी से अलग करने का प्रयास । (5) माली द्वारा पौधों की सावधानी से काट-छाँट ।

भाषा की बात

प्रश्न 1. 'हरे-हरे', 'पुष्प-पुष्प' में एक शब्द की एक ही अर्थ में पुनरावृत्ति हुई है। कविता के 'हरे-हरे ये पात' वाक्यांश में 'हरे-हरे' शब्द युग्म पत्तों के लिए विशेषण के रूप में प्रयुक्त हुए हैं। यहाँ 'पात' शब्द बहुवचन में प्रयुक्त है। ऐसा प्रयोग भी होता है जब कर्ता या विशेष्य एकवचन में हो और कर्म या क्रिया या विशेषण बहुवचन में; जैसे-वह लंबी-चौड़ी बातें करने लगा। कविता में एक ही शब्द का एक से अधिक अर्थों में भी प्रयोग होता है-''तीन बेर खाती ते वे तीन बेर खाती है।'' जो तीन बार खाती थी वह तीन बेर खाने लगी है। एक शब्द 'बेर' का दो अर्थों में प्रयोग करने से वाक्य में चमत्कार आ गया। इसे यमक अलंकार कहा जाता है। कभी-कभी उच्चारण की समानता से शब्दों की पुनरावृत्ति का आभास होता है जबकि दोनों दो प्रकार के शब्द होते हैं; जैसे- मन का / मनका।

ऐसे वाक्यों को एकत्र कीजिए जिनमें एक ही शब्द की पुनरावृत्ति हो। ऐसे प्रयोगों को ध्यान से देखिए और निम्नलिखित पुनरावृत्त शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए— बातों-बातों में, रह-रहकर, लाल-लाल, सुबह-सुबह, रातों-रात, घड़ी-घड़ी।

उत्तर— एक ही शब्द की पुनरावृत्ति वाले वाक्य— 1. कनक-कनक ते सौगुनी मादकता अधिकाय। 2. काली घटा का घमंड घटा।

उपर्युक्त वाक्यों में प्रयुक्त 'कनक' और 'घटा' शब्द दो बार प्रयुक्त हुए हैं। उनका अर्थ भी प्रत्येक बार अलग-अलग है, जैसे—पहले वाक्य में प्रयुक्त 'कनक' के अर्थ हैं-'सोना' और 'धतूरा' और दूसरे वाक्य में प्रयुक्त 'घटा' के अर्थ हैं- 'बदली' अर्थात् घटा और कम होना।

प्रश्न में दिए गए पुनरावृत्त शब्दों का वाक्य में प्रयोग निम्नलिखित है—

1. बातों-बातों में— बातों-बातों में सोहन ने अपना भेद स्वयं खोल दिया।
2. रह-रहकर — सड़क पर खरबूजे बेचने वाली बुढ़िया रह-रहकर सुबकने लगती।
3. लाल-लाल — मैं कल बाजार से ताजे और लाल-लाल टमाटर खरीदकर लायी।
4. सुबह-सुबह — सुबह-सुबह उठकर व्यायाम करने से मस्तिष्क दिनभर तरोताजा रहता है।
5. रातों-रात — कर्फ्यू लगने की खबर सुनकर लोगों ने रातों-रात अपनी जरूरत का सामान खरीद कर घर में रख लिया।
6. घड़ी-घड़ी — पढ़ते समय भी मोहन घड़ी-घड़ी बाहर की ओर ही ताकता रहता है।

प्रश्न 2. 'कोमल गात, मृदुल वसंत, हरे-हरे ये पात'

विशेषण जिस संज्ञा (या सर्वनाम) की विशेषता बताता है, उसे विशेष्य कहते हैं। ऊपर दिए गए वाक्यांशों में गात, वसंत और पात शब्द विशेष्य हैं, क्योंकि इनकी विशेषता (विशेषण) क्रमशः कोमल, मृदुल और हरे-हरे शब्दों से ज्ञात हो रही है।

हिंदी विशेषणों के सामान्यतया चार प्रकार माने गए हैं— गुणवाचक विशेषण, परिमाणवाचक विशेषण, संख्यावाचक विशेषण और सार्वनामिक विशेषण।

कुछ करने को

प्रश्न 1. वसंत पर अनेक सुंदर कविताएँ हैं। कुछ कविताओं का संकलन तैयार कीजिए।

उत्तर—वसंत से संबंधित कुछ कविताएँ निम्नलिखित हैं—

1. *ओ जंगल युवा,*
बुलाते हो
आता हूँ
एक हरे वसंत में डूबा हुआ
आऽताऽ हूँ।

—अशोक वाजपेयी
(युवा जंगल)

2. *चैत वसंता होय धमारी।*
मोहि लेखे संसार उजारी।।
पंचम विरह पंचसर मारै।
रकत रोइ सगरौ वन ढारै।।
बूड़ि उठे सब तरिवर पाता।

भीजि मजीठ टेसु बन राता।।
बौरे आम फरै अब लागे ।
अबहूँ आउ घर कन्त सभागे।।

—मलिक मोहम्मद जायसी
(नागमती का वियोग वर्णन)

3. *मधुमय वसंत जीवन बन के,*
कब आये थे तुम चुपके से।

—जयशंकर प्रसाद

प्रश्न 2. शब्दकोश में 'वसंत' शब्द का अर्थ देखिए। शब्दकोश में शब्दों के अर्थों के अतिरिक्त बहुत-सी अलग तरह की जानकारियाँ भी मिल सकती हैं। उन्हें अपनी कॉपी में लिखिए।

उत्तर- 'शब्दकोश' में 'वसंत' के अर्थ निम्न हैं—

(क) ऋतुराज अर्थात ऋतुओं का राजा। (ख) छः ऋतुओं में से एक ऋतु।
(ग) कामदेव का देवरूप में सहचर। (घ) एक राग का नाम।

अन्य जानकारियाँ निम्नलिखित हैं—

(1) वसंत पंचमी—माघमास में शुक्ल पक्ष की पंचमी को माँ सरस्वती के जन्म दिवस के रूप में मनाया जाने वाला त्योहार।
(2) वसंती रंग—त्याग तथा शौर्य का प्रतीक रंग। (3) वसंत घोषी—कोकिल।
(4) वसंतोत्सव—वसंत यात्रा को कहा जाता है। (5) वसंत सखा—कामदेव।
(6) वसंत महोत्सव—होलिकोत्सव के रूप में मनाया जाता है।

2 लाख की चूड़ियाँ

• कामतानाथ

गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्याएँ एवं अर्थग्रहण संबंधी प्रश्नोत्तर

1. सारे गाँव में बदलू मुझे सबसे अच्छा आदमी लगता था क्योंकि वह मुझे सुंदर-सुंदर लाख की गोलियाँ बनाकर देता था। मुझे अपने मामा के गाँव जाने का सबसे बड़ा चाव यही था कि जब मैं वहाँ से लौटता था तो मेरे पास ढेर सारी गोलियाँ होतीं, रंग-बिरंगी गोलियाँ जो किसी भी बच्चे का मन मोह लें।

(पा. पु. पृ. 5)

कठिन-शब्दार्थ — आदमी = व्यक्ति। चाव = उल्लास भरी इच्छा। ढेर सारी = बहुत-सी। मन मोहना = आकर्षित करना।

संदर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'वसंत' भाग-3 में संकलित पाठ 'लाख की चूड़ियाँ' से उद्धृत है। इस पाठ के लेखक कामतानाथ हैं। लेखक यहाँ अपने मामा के गाँव के 'बदलू' के बारे में बता रहा है।

व्याख्या— लेखक अपने बचपन की यादों के आधार पर कहता है कि मामा के गाँव में मुझे 'बदलू' नामक व्यक्ति का स्वभाव बहुत अच्छा लगता था। इसी बदलू के कारण वह मामा के गाँव में जाने के लिए आतुर रहता था। इसका कारण यह था कि लेखक जब भी मामा के गाँव जाता तो वह बदलू के पास अवश्य जाता था। बदलू उसे लाख की रंग-बिरंगी छोटी-छोटी गोलियाँ बनाकर देता था। जब लेखक गाँव से वापस लौटता तो उसके पास ढेर सारी लाख की रंग-बिरंगी गोलियाँ होतीं। गोलियाँ भी इतनी सुन्दर होतीं, जो सभी बालकों को आकर्षित कर लेतीं।

1. उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। 2. लेखक को बदलू क्या देता था?
3. लेखक को मामा के गाँव जाने का चाव क्यों रहता था? 4. लाख की गोलियाँ कैसी थीं?

उत्तर— (1) उचित शीर्षक— लाख की गोलियाँ। (2) बदलू लेखक को लाख की रंग-बिरंगी गोलियाँ देता था। (3) बदलू द्वारा दी जाने वाली लाख की गोलियों के कारण लेखक को मामा के गाँव जाने का चाव रहता था। (4) लाख की गोलियाँ रंग-बिरंगी व मन मोहने वाली थीं।

2. वैसे तो मेरे मामा के गाँव का होने के कारण मुझे बदलू को 'बदलू मामा' कहना चाहिए था परंतु मैं उसे 'बदलू मामा' न कहकर बदलू काका कहा करता था जैसा कि गाँव के सभी बच्चे उसे कहा करते थे। बदलू का मकान कुछ ऊँचे पर बना था। मकान के सामने बड़ा-सा सहन था जिसमें एक पुराना नीम का वृक्ष लगा था। उसी के नीचे बैठकर बदलू अपना काम किया करता था। बगल में भट्ठी दहकती रहती जिसमें वह लाख पिघलाया करता। सामने एक लकड़ी की चौखट पड़ी रहती जिस पर लाख के मुलायम होने पर वह उसे सलाख के समान पतला करके चूड़ी का आकार देता। पास में चार-छह विभिन्न आकार की बेलननुमा मुँगेरियाँ रखी रहतीं जो आगे से कुछ पतली और पीछे से मोटी होतीं। लाख की चूड़ी का आकार देकर वह उन्हें मुँगेरियों पर चढ़ाकर गोल और चिकना बनाता और तब एक-एक कर पूरे हाथ की चूड़ियाँ बना चुकने के पश्चात वह उन पर रंग करता। (पा.पु.पृ. 5-6)

कठिन-शब्दार्थ— सहन = आँगन। भट्ठी = अँगीठी। दहकना = जलना।

संदर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'वसंत' में संकलित कामतानाथ लिखित कहानी 'लाख की चूड़ियाँ' से लिया गया है। लेखक ने इस अंश में बदलू द्वारा लाख की चूड़ियाँ बनाने के कार्य का वर्णन किया है।

व्याख्या— लेखक कहता है कि बदलू उसके मामा के गाँव का रहने वाला था। अत: उसे बदलू को गाँव-नाते से मामा कहना चाहिए था, परंतु गाँव के सभी बच्चे बदलू को काका कहकर पुकारते थे। अत: लेखक भी उसे काका ही कहता था। बदलू का घर कुछ ऊँची भूमि पर बना हुआ था। मचान के सामने एक बड़ा आँगन था जिसमें एक नीम का पुराना पेड़ था। इसी पेड़ के नीचे बदलू चूड़ियाँ बनाया करता था। वहाँ पर लाख पिघलाने के लिए एक भट्टी बनी हुई थी। बदलू लाख को पिघलाकर सामने पड़ी लकड़ी की चौखट पर मुलायम लाख को सलाख की तरह पतला करता था। फिर उसे चूड़ी जैसा आकार देता था। पास ही बेलन जैसी आगे से कुछ पतली और पीछे से मोटी मुँगेरियाँ रखी रहती थीं। बदलू लाख की उन चूड़ियों को मुँगेरियों पर चढ़ा लेता था और उन्हें गोल तथा चिकनी बनाता था। पूरे हाथ की चूड़ियाँ बन जाने पर, वह उन्हें सुंदर रंगों से सजाता था। इस प्रकार दिनभर उसका यही कार्य चलता रहता था।

1. लेखक बदलू को क्या कहकर बुलाता था? और क्यों?
2. बदलू कहाँ रहता था?
3. बदलू क्या काम किया करता था?
4. मुँगेरियाँ किस काम आती थीं?

उत्तर—(1) लेखक बदलू को 'बदलू काका' कहकर बुलाता था। यद्यपि बदलू उसके मामा के गाँव का रहने वाला था इस नाते उसे बदलू को काका कहने के स्थान पर बदलू मामा बुलाना चाहिए था, किन्तु गाँव के दूसरे लड़कों की तरह वह भी उसे काका ही कहता था। (2) बदलू लेखक के मामा के गाँव में कुछ ऊँचे स्थान पर बने मकान में रहता था। (3) बदलू लाख की चूड़ियाँ बनाने का काम किया करता था। (4) उन पर लाख की चूड़ियों को आकार देकर बदलू उन्हें चिकनाता था और गोल बनाता था।

3. बदलू यह कार्य सदा ही एक मचिये पर बैठकर किया करता था जो बहुत ही पुरानी थी। बगल में ही उसका हुक्का रखा रहता जिसे वह बीच-बीच में पीता रहता। गाँव में मेरा दोपहर का समय अधिकतर बदलू के पास बीतता। वह मुझे 'लला' कहा करता और मेरे पहुँचते ही मेरे लिए तुरंत एक मचिया मँगा देता। मैं घंटों बैठे-बैठे उसे इस प्रकार चूड़ियाँ बनाते देखता रहता। लगभग रोज ही वह चार-छह जोड़े चूड़ियाँ बनाता। पूरा जोड़ा बना लेने पर वह उसे बेलन पर चढ़ाकर कुछ क्षण चुपचाप देखता रहता मानो वह बेलन न होकर किसी नव-वधू की कलाई हो। (पा. पु. पृ-6)

कठिन-शब्दार्थ— सदा = हमेशा। मचिया = पीढ़ी (बैठने की चौकी)। नव-वधू = नई दुल्हन।

संदर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'वसंत' से संकलित कामतानाथ द्वारा लिखित 'लाख की चूड़ियाँ' नामक कहानी से लिया गया है। इस अंश में लेखक ने बदलू के लाख की चूड़ियाँ बनाने के काम को देखने का वर्णन किया है।

व्याख्या— लेखक दोपहर के समय बदलू के घर पहुँच जाता था। वह देखता कि बदलू चूड़ियाँ बनाने का काम एक बहुत पुरानी पीढ़ी या चौकी पर बैठकर किया करता था। बगल ही में उसका हुक्का रखा रहता था। काम के बीच-बीच में उसे पीता रहता था। लेखक पूरे दोपहर को बदलू के पास ही बैठकर बिताया करता था। बदलू लेखक से बड़ा स्नेह करता था। वह उसे प्यार से 'लला' कहकर पुकारता था। लेखक के पहुँचते ही वह उसके बैठने के लिए तुरंत एक पीढ़ी मँगा लिया करता था। लेखक घंटों तक बदलू को चूड़ियाँ बनाते देखा करता था। बदलू दिनभर में लगभग पाँच या छह जोड़ी चूड़ियाँ बना लेता था। तैयार जोड़ों को वह बेलन पर चढ़ाकर परखता था। उस समय बदलू को वह जोड़ा ऐसा लगता था मानो वह बेलन पर नहीं, किसी नई बहू की कलाई पर पहनी गई चूड़ियों को देख रहा हो।

1. बदलू कहाँ बैठकर चूड़ी बनाने का काम किया करता था? वह चूड़ी बनाते समय बीच-बीच में क्या करता था?
2. अपने मामा के यहाँ लेखक का अधिकतर समय कहाँ बीतता था?
3. बदलू लेखक को क्या कहकर पुकारता था?
4. बदलू तैयार चूड़ी के जोड़े को किस प्रकार देखता था?

उत्तर—(1) बदलू एक बहुत पुरानी मचिया पर बैठकर चूड़ी बनाने का काम किया करता था। वह चूड़ी बनाते समय बीच-बीच में हुक्का पीने का काम किया करता था। (2) अपने मामा के यहाँ लेखक का अधिकतर समय बदलू के पास उसे चूड़ियाँ बनाते हुए देखने में बीतता था। (3) बदलू लेखक को 'लला' कहकर पुकारता था। (4) बदलू तैयार चूड़ी के जोड़े को इस प्रकार देखता था जैसे वह किसी नई दुल्हन की कलाई हो।

4. बदलू मनिहार था। चूड़ियाँ बनाना उसका पैतृक पेशा था और वास्तव में वह बहुत ही सुंदर चूड़ियाँ बनाता था। उसकी बनाई हुई चूड़ियों की खपत भी बहुत थी। उस गाँव में तो सभी स्त्रियाँ उसकी बनाई हुई चूड़ियाँ पहनती ही थीं, आस-पास के गाँवों के लोग भी उससे चूड़ियाँ ले जाते थे। परंतु वह कभी भी चूड़ियों को पैसों से बेचता न था। उसका अभी तक वस्तु-विनिमय का तरीका था और लोग अनाज के बदले उससे चूड़ियाँ ले जाते थे। बदलू स्वभाव से बहुत सीधा था। मैंने कभी भी उसे किसी से झगड़ते नहीं देखा। हाँ, शादी-विवाह के अवसरों पर वह अवश्य जिद पकड़ जाता था। जीवनभर चाहे कोई उससे मुफ्त चूड़ियाँ ले जाए परंतु विवाह के अवसर पर वह सारी कसर निकाल लेता था। आखिर सुहाग के जोड़े का महत्त्व ही और होता है। मुझे याद है, मेरे मामा के यहाँ किसी लड़की के विवाह पर जरा-सी किसी बात पर बिगड़ गया था और फिर उसको मनाने में लोहे लग गए थे। विवाह में इसी जोड़े का मूल्य इतना बढ़ जाता था कि उसके लिए उसकी घरवाली को सारे वस्त्र मिलते, ढेरों अनाज मिलता, उसको अपने लिए पगड़ी मिलती और रुपये जो मिलते सो अलग। (पा.पु.पृ.-6)

कठिन-शब्दार्थ— मनिहार = चूड़ी बनाने वाला। पैतृक = पूर्वजों का। पेशा = व्यवसाय। खपत = माँग। वस्तु-विनिमय = वस्तु के बदले वस्तु देना। स्वभाव = आदत। कसर निकालना = कमी पूरी करना। लोहा लगना = कठिनाई होना। मूल्य = कीमत।

संदर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक वसंत में संकलित, कामतानाथ की कहानी 'लाख की चूड़ियाँ' से लिया गया है। इस अंश में लेखक ने बदलू की सुंदर चूड़ियों की लोकप्रियता और उसके स्वभाव की कुछ विशेषताओं का वर्णन किया है।

व्याख्या— बदलू चूड़ियाँ बनाने वाला 'मनिहार' था। यह काम उसके घर में पुरखों के समय से चला आ रहा था। उसकी बनाई चूड़ियाँ बहुत ही सुंदर होती थीं। वे खूब बिकती थीं। गाँव में तो सभी स्त्रियाँ उसी की बनाई चूड़ियाँ ही पहना करती थीं। बदलू अपनी चूड़ियाँ पैसों से नहीं बेचता था, वह चूड़ियों के बदले अनाज लिया करता था। वह अभी तक वस्तु के बदले वस्तु लेने की पुरानी परंपरा का पालन कर रहा था। बदलू बहुत सीधे स्वभाव वाला व्यक्ति था। उसका कभी किसी से झगड़ा नहीं होता था। ब्याह-शादी के समय वह अपनी माँग पर अवश्य अड़ जाता था। वह शादियों में पूरे साल की कसर निकाल लेता था। विवाह के समय कन्या को पहनाई जाने वाली सौभाग्य-सूचक चूड़ियों का बहुत महत्त्व होता है। बदलू इस अवसर का पूरा-पूरा लाभ उठाता था। इस जोड़े के बदले उसे पत्नी के सारे कपड़े, अपने लिए पगड़ी और अनाज तथा रुपए भी मिला करते थे।

1. बदलू कौन था? उसका व्यवसाय कैसा चल रहा था?
2. बदलू अपनी चूड़ियाँ कैसे बेचता था?
3. बदलू स्वभाव से कैसा व्यक्ति था? शादी-विवाह के अवसर पर उसका व्यवहार कैसा होता था?
4. शादी-विवाह के अवसर पर बदलू को सुहाग के जोड़े की चूड़ियों के बदले क्या-क्या मिलता था?

उत्तर—(1) बदलू पेशे से मनिहार अर्थात चूड़ी बनाने वाला था। वह लाख की चूड़ियाँ बनाकर बेचा करता था। उसका व्यवसाय बहुत अच्छा चल रहा था। उसकी चूड़ियों की खपत केवल अपने ही गाँव में नहीं अपितु दूसरे गाँवों में भी थी। दूसरे गाँवों के लोग भी उसकी चूड़ियाँ खरीदने आते थे। (2) बदलू अपनी चूड़ियाँ अनाज के बदले बेचता था, पैसों से नहीं। (3) बदलू स्वभाव से बहुत सीधा-सादा व्यक्ति था। परंतु शादी-विवाह के अवसर पर अपनी चूड़ियों के बदले मुँहमाँगे दाम की जिद पर अड़ जाता था। इन्हीं अवसरों पर वह अपनी पिछली कसर दूर कर लेता था। (4) शादी-विवाह के अवसर पर बदलू को सुहाग वाली चूड़ियों के बदले उसको उसकी घरवाली के लिए सारे वस्त्र, ढेरों अनाज, पगड़ी और रुपए भी मिलते थे।

5. यदि संसार में बदलू को किसी बात से चिढ़ थी तो वह थी काँच की चूड़ियों से। यदि किसी भी स्त्री के हाथों में उसे काँच की चूड़ियाँ दिख जातीं तो वह अंदर-ही-अंदर कुढ़ उठता और कभी-कभी तो दो-चार बातें भी सुना देता।

मुझसे तो वह घंटों बातें किया करता। कभी मेरी पढ़ाई के बारे में पूछता, कभी मेरे घर के बारे में और कभी यों ही शहर के जीवन के बारे में। मैं उससे कहता कि शहर में सब काँच की चूड़ियाँ पहनते हैं तो वह उत्तर देता, ''शहर की बात और है, लला! वहाँ तो सभी कुछ होता है। वहाँ तो औरतें अपने मरद का हाथ पकड़कर सड़कों पर घूमती भी हैं और फिर उनकी कलाइयाँ नाजुक होती हैं न! लाख की चूड़ियाँ पहनें तो मोच न आ जाए।'' (पा.पु.पृ.-7)

कठिन-शब्दार्थ—संसार = विश्व। चिढ़ = खीझ। कुढ़ना = ईर्ष्या करना। मरद = आदमी, पति। नाजुक = कमजोर।

संदर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'वसंत' में संकलित कामतानाथ द्वारा लिखित कहानी 'लाख की चूड़ियाँ' से लिया गया है। इस गद्यांश में लेखक ने बदलू के काँच की चूड़ियों से चिढ़ने का और शहर की स्त्रियों द्वारा लाख की चूड़ियाँ न पहनने पर किये गये व्यंग्य का परिचय कराया है।

व्याख्या— बदलू लाख की चूड़ियाँ बनाता था। उसे काँच की बनी चूड़ियों से बहुत चिढ़ थी। काँच की चूड़ियाँ उसके व्यवसाय की शत्रु थीं। उनके प्रचार से उसकी बनाई चूड़ियों की बिक्री घट रही थी। इसीलिए जब वह किसी स्त्री को काँच की चूड़ियाँ पहने देखता था तो कुढ़ने लगता था और कड़वी बातें भी कह देता था।

बदलू लेखक से कभी उसकी पढ़ाई के बारे में और कभी शहरी जीवन के बारे में, घंटों बातें किया करता था। शहरों में काँच की चूड़ियाँ पहने जाने की बात पर वह शहरों के जीवन का खूब मजाक बनाता था। वह कहता कि शहरों की तो बात ही अलग है। वहाँ तो स्त्रियाँ अपने मर्दों के हाथ पकड़ कर सड़कों पर घूमती हैं। वहाँ की स्त्रियों की कलाइयाँ बड़ी कोमल होती हैं। लाख की भारी चूड़ियाँ पहनने से उनकी कलाइयों में मोच आ सकती है।

1. बदलू को किस बात से चिढ़ थी?
2. किसी स्त्री के हाथ में काँच की चूड़ियाँ दिख जाने पर बदलू क्या करता था?
3. बदलू लेखक से घंटों तक किन विषयों पर बात किया करता था?
4. शहर की औरतों के संबंध में बदलू का क्या दृष्टिकोण था?

उत्तर— (1) बदलू को काँच की चूड़ियों से चिढ़ थी। (2) बदलू जब भी किसी स्त्री के हाथ में काँच की चूड़ियाँ देखता तो वह अंदर ही अंदर कुढ़ जाता था। इतना ही नहीं वह गुस्से में उस स्त्री को दो-चार बातें भी सुना देता था। (3) बदलू लेखक से उसकी पढ़ाई के बारे में, उसके घर के बारे में तथा शहर के जीवन के बारे में बातें किया करता था। (4) बदलू का मानना था कि शहर की स्त्रियों की कलाई बहुत नाजुक होती है, यदि वह लाख की चूड़ियाँ पहनेंगी तो उनकी कलाई में मोच आ जाएगी।

6. कभी-कभी बदलू मेरी अच्छी खासी खातिर भी करता। जिन दिनों उसकी गाय के दूध होता वह सदा मेरे लिए मलाई बचाकर रखता और आम की फसल में तो मैं रोज़ ही उसके यहाँ से दो-चार आम खा आता। परंतु इन सब बातों के अतिरिक्त जिस कारण वह मुझे अच्छा लगता वह यह था कि लगभग रोज़ ही वह मेरे लिए एक-दो गोलियाँ बना देता। (पा.पु.पृ. 7, 8)

कठिन-शब्दार्थ — अच्छी-खासी = बहुत अधिक। खातिर = सत्कार, आवभगत। रोज़ = प्रतिदिन। अतिरिक्त = अलावा।

संदर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'वसंत' भाग-3 में संकलित कामतानाथ लिखित कहानी 'लाख की चूड़ियाँ' से उद्धृत है। लेखक यहाँ बदलू द्वारा की जाने वाली खातिर का वर्णन कर रहा है।

व्याख्या— लेखक कहता है कि जब वह बदलू के घर जाता तो अकसर बदलू उसकी अच्छी खातिरदारी करता था। बदलू के पास एक गाय थी, जब वह दूध देती, तो उसकी मलाई लेखक को खिलाता। आम की फसल होने पर लेखक बदलू के यहाँ रोजाना दो-चार पके आम खाकर आता। इसके साथ प्रतिदिन बदलू लेखक के लिए एक-दो गोलियाँ लाख की बनाकर दे देता था। इसलिए लेखक को बदलू सबसे प्रिय लगता था।

1. उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।
2. बदलू लेखक को किसकी मलाई खिलाता था?
3. किसकी फसल होने पर लेखक क्या खाता था?
4. बदलू प्रतिदिन लेखक को क्या देता था?

उत्तर—(1) उचित शीर्षक— खातिरदारी। (2) बदलू गाय के दूध की मलाई लेखक को खिलाता था। (3) आम की फसल होने पर लेखक को आम खाने को मिलते। (4) बदलू लेखक को नित्य-प्रति लाख की एक-दो गोलियाँ बनाकर देता।

7. मैं बहुधा हर गर्मी की छुट्टी में अपने मामा के यहाँ चला जाता और एक-आध महीने वहाँ रहकर स्कूल खुलने के समय तक वापस आ जाता। परंतु दो-तीन बार ही मैं अपने मामा के यहाँ गया होऊँगा तभी मेरे पिता की एक दूर के शहर में बदली हो गई और एक लंबी अवधि तक मैं अपने मामा के गाँव न जा सका। तब लगभग आठ-दस वर्षों के बाद जब मैं वहाँ गया तो इतना बड़ा हो चुका था कि लाख की गोलियों में मेरी रुचि नहीं रह गई थी। अत: गाँव में होते हुए भी कई दिनों तक मुझे बदलू का ध्यान न आया। इस बीच मैंने देखा कि गाँव में लगभग सभी स्त्रियाँ काँच की चूड़ियाँ पहने हैं। विरले ही हाथों में मैंने लाख की चूड़ियाँ देखीं। (पा.पु.पृ.-8)

कठिन-शब्दार्थ— बहुधा = बहुत बार। अवधि = समय। रुचि = शौक। विरले = किसी-किसी के। सहसा = अचानक।

संदर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'वसंत' में संकलित कामतानाथ की कहानी 'लाख की चूड़ियाँ' से लिया गया है। इस अंश में लेखक ने आठ-दस वर्षों के बाद मामा के गाँव जाने पर वहाँ लाख की चूड़ियों के स्थान पर काँच की चूड़ियों के प्रचलन के बारे में बताया है।

व्याख्या— लेखक स्कूलों में गर्मी की छुट्टियाँ होने पर अपने मामा के यहाँ चला जाता था। एक-आध महीने वहाँ रहता था और स्कूल खुलने के समय पर लौट आता था। तीन-चार साल तक वह मामा के गाँव जाता रहा। इसके बाद उसके पिता की दूर के शहर में बदली हो गई और वह आठ-दस साल बाद ही मामा के गाँव जा सका। जब वह वहाँ पहुँचा तो पहले की तरह लाख की गोलियों में उसकी रुचि नहीं रही थी। अब वह बड़ा हो गया था और अन्य बातों में रुचि लेता था। कई दिन तक गाँव में रहने पर भी उसे बदलू की सुध नहीं आई। उसने गाँव में एक बड़ा बदलाव भी देखा कि वहाँ स्त्रियाँ काँच की चूड़ियाँ पहनने लगी थीं। एक-आध ही स्त्री उसे लाख की चूड़ियाँ पहने दिखाई दी।

1. लेखक बहुत समय तक अपने मामा के घर क्यों नहीं जा सका?
2. लेखक को किसकी और क्यों याद नहीं आयी?
3. लेखक जब दोबारा गाँव पहुँचा तो उसने स्त्रियों की चूड़ियों में क्या अन्तर पाया?
4. लेखक को बदलू की याद कब आई?

उत्तर—(1) लेखक के पिता की बदली (तबादला) किसी दूर के शहर में हो जाने के कारण लेखक बहुत समय तक अपने मामा के घर नहीं जा सका। (2) लेखक को बदलू की और उसकी बनाई लाख की चूड़ियों की याद नहीं आयी क्योंकि अब वह बड़ा हो चुका था और लगभग पिछले आठ-दस साल अपने मामा के गाँव भी नहीं आया था। (3) लेखक ने देखा कि गाँव की अधिकांश स्त्रियाँ काँच की चूड़ियाँ पहनने लगी थीं। विरली ही स्त्रियाँ लाख की चूड़ियाँ पहने थीं। (4) एक दिन जब लेखक के मामा की छोटी लड़की अचानक फिसलकर आँगन में गिर गई और उसके हाथ की काँच की चूड़ी टूटकर उसकी कलाई में घुस गई तब लेखक को बदलू की याद आई।

8. तब एक दिन सहसा मुझे बदलू का ध्यान हो आया। बात यह हुई कि बरसात में मेरे मामा की छोटी लड़की आँगन में फिसलकर गिर पड़ी और उसके हाथ की काँच की चूड़ी टूटकर उसकी कलाई में घुस गई और उससे खून बहने लगा। मेरे मामा उस समय घर पर न थे। मुझे ही उसकी

मरहम-पट्टी करनी पड़ी। तभी सहसा मुझे बदलू का ध्यान हो आया और मैंने सोचा कि उससे मिल आऊँ। अतः शाम को मैं घूमते-घूमते उसके घर चला गया। बदलू वहीं चबूतरे पर नीम के नीचे एक खाट पर लेटा था। (पा.पु.पृ.-8)

कठिन-शब्दार्थ— बहुधा = बहुत बार। अवधि = समय। रुचि = शौक। विरले = किसी-किसी के। सहसा = अचानक।

संदर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'वसंत' में संकलित कामतानाथ की कहानी 'लाख की चूड़ियाँ' से लिया गया है। इस अंश में लेखक ने बदलू का ध्यान आने के प्रसंग का वर्णन किया है।

व्याख्या— लेखक को एक घटना के कारण अचानक ही बदलू काका का ध्यान आ गया। वह मामा के गाँव में था। बरसात हो रही थी। अचानक उसके मामा की लड़की आँगन में फिसलकर गिर गई और काँच की चूड़ी टूटकर उसकी कलाई में घुस गई। खून बहने लगा। मामा के घर पर न होने के कारण लेखक को ही उसको पट्टी बाँधनी पड़ी। काँच की चूड़ी टूटने और लड़की के घायल हो जाने से उसे तुरंत बदलू काका का ध्यान दिला दिया। उसके मन में बदलू से मिलने और उसके हाल-चाल जानने की इच्छा जाग उठी। शाम के समय वह घूमता हुआ बदलू के घर जा पहुँचा। उसने देखा कि बदलू चबूतरे पर नीम के नीचे खाट पर लेटा हुआ था। चूड़ी बनाने का कोई सामान वहाँ नहीं था।

1. बरसात में लेखक के आँगन में कौन फिसल कर गिर गया था? 2. लड़की कैसे घायल हो गई?
3. लेखक को मामा के घर पर न होने से क्या करना पड़ा? 4. लेखक को इस घटना से किसका ध्यान आ गया और उसने क्या किया?

उत्तर—(1) लेखक के मामा की छोटी लड़की बरसात में आँगन में फिसलकर गिर गई थी। (2) लड़की के हाथ की काँच की चूड़ी उसकी कलाई में घुस गई और वह घायल हो गई। (3) लेखक के मामा घर पर नहीं थे, इसलिए उसे ही लड़की की मरहम-पट्टी करनी पड़ी। (4) लेखक को इस घटना से बदलू का ध्यान आ गया और वह उससे मिलने उसके घर पहुँच गया।

9. नमस्ते बदलू काका! मैंने कहा।

नमस्ते भइया! उसने मेरी नमस्ते का उत्तर दिया और उठकर खाट पर बैठ गया। परंतु उसने मुझे पहचाना नहीं और देर तक मेरी ओर निहारता रहा।

मैं हूँ जनार्दन, काका! आपके पास से गोलियाँ बनवाकर ले जाता था। मैंने अपना परिचय दिया।

बदलू फिर भी चुप रहा। मानो वह अपने स्मृति पटल पर अतीत के चित्र उतार रहा हो और तब वह एकदम बोल पड़ा, आओ-आओ, लला बैठो! बहुत दिन बाद गाँव आए।

हाँ, इधर आना नहीं हो सका, काका! मैंने चारपाई पर बैठते हुए उत्तर दिया। कुछ देर फिर शांति रही। मैंने इधर-इधर दृष्टि दौड़ाई। न तो मुझे उसकी मचिया ही नज़र आई, न ही भट्ठी। (पा.पु.पृ. 8-9)

कठिन-शब्दार्थ — उत्तर = जवाब। खाट = चारपाई। निहारना = एकटक देखना। परिचय = जानकारी। स्मृति-पटल = यादों का परदा। अतीत = बीता हुआ समय। एकदम = अचानक। दृष्टि = नज़र।

संदर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'वसंत' भाग-3 में संकलित कामतानाथ लिखित कहानी 'लाख की चूड़ियाँ' से उद्धृत है। लेखक लंबे समय के बाद बदलू के पास जाकर बात कर रहा है।

व्याख्या— लेखक बदलू के घर जाकर उसे नमस्कार करता है। चारपाई से उठते हुए बदलू ने नमस्ते ली। साथ ही वह लेखक की ओर लगातार देखता रहा, शायद वह लंबे समय से लेखक से न मिल पाने के कारण वह पहचान नहीं रहा था, अपने मस्तिष्क पर जोर डालने पर भी लेखक को बदलू पहचान नहीं पाया। तब लेखक ने अपना परिचय देते हुए कहा कि काका, मैं जनार्दन हूँ, जिसे आप बचपन में लाख की गोलियाँ बनाकर देते थे। बदलू ने बहुत देर तक सोचा फिर अचानक उसे याद आ गया और खुशी से बोला- आओ लला, बैठो। बहुत दिन बाद इधर आए हो। चारपाई पर बैठते हुए लेखक बोला- सही कहते हो काका, मेरा इधर आना ही नहीं हो पाया था। थोड़ी देर चुप्पी होने पर लेखक ने वहाँ आस-पास देखा, लेकिन उसे न तो भट्ठी ही दिखाई दी, न मचिया जिस पर बैठकर बदलू लाख की चूड़ियाँ बनाता था।

1. उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए। 2. लेखक ने बदलू को अपना क्या नाम बताया?
3. बदलू कहाँ पर बैठा था? 4. लेखक को बदलू के यहाँ क्या दिखाई नहीं दिया?

उत्तर—(1) उचित शीर्षक- बदलू से मुलाकात। (2) लेखक ने अपना नाम जनार्दन बताया था। (3) बदलू अपने घर चारपाई पर बैठा था। (4) लेखक को बदलू के घर न तो मचिया दिखाई दी और न ही भट्ठी।

10. आजकल काम नहीं करते काका? मैंने पूछा।

नहीं लला, काम तो कई साल से बंद है। मेरी बनाई हुई चूड़ियाँ कोई पूछे तब तो। गाँव-गाँव में काँच का प्रचार हो गया है। वह कुछ देर चुप रहा, फिर बोला, मशीन युग है न यह, लला! आजकल सब काम मशीन से होता है। खेत भी मशीन से जोते जाते हैं और फिर जो सुंदरता काँच की चूड़ियों में होती है, लाख में कहाँ संभव है? लेकिन काँच बड़ा खतरनाक होता है। बड़ी जल्दी टूट जाता है, मैंने कहा। (पा.पु.पृ. 9)

कठिन-शब्दार्थ—प्रचार = फैलाव, परिचय। मशीन युग = मशीनों का अधिक प्रयोग।

संदर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'वसंत' में संकलित कामतानाथ की कहानी 'लाख की चूड़ियाँ' से लिया गया है। इस अंश में लेखक बदलू का काम बंद हो जाने का कारण पूछ रहा है।

व्याख्या— जब लेखक बदलू से मिलने उसके घर पहुँचा तो वह नीम के नीचे चारपाई पर लेटा हुआ था। लेखक को बदलू ने देर से पहचाना। लेखक ने बदलू से उसके काम के बारे में पूछा। बदलू ने उत्तर दिया कि उसका काम कई साल से बंद था। इसका कारण बताते हुए बदलू ने कहा कि उसकी बनाई लाख की चूड़ियों का कोई ग्राहक नहीं रहा था। सभी गाँवों में स्त्रियों ने काँच की चूड़ियाँ पहनना आरंभ कर दिया था। बदलू ने भारी मन से कहा अब मशीनों से काम होने लगा है। हर क्षेत्र और धंधे में मशीनें आ गई हैं। बदलू ने कहा कि खेती के काम में भी ट्रेक्टर, बिजली के पंप आदि मशीनों से काम होने लगा था। उसने कहा कि मशीनों से बनी काँच की चूड़ियाँ जितनी सुंदर होती थी, लाख की चूड़ियाँ नहीं हो सकती थीं। यह सुनकर लेखक बोला- लेकिन काका काँच तो बहुत खतरनाक होता है, बहुत जल्दी टूट भी जाता है। मशीनों ने बदलू का धन्धा चौपट कर दिया था।

1. लेखक ने बदलू से क्या पूछा?
2. बदलू का काम कई सालों से क्यों बंद था?
3. बदलू ने आज के युग को मशीनी युग क्यों कहा है?
4. बदलू ने अपना काम बंद होने का क्या कारण बताया?

उत्तर—(1) लेखक जब बदलू से मिलने पहुँचा तो उसने देखा कि न तो वहाँ बदलू के बैठने की मचिया थी और न ही भट्ठी थी। लेखक ने बदलू से उसके काम के बारे में पूछा। (2) गाँवों में काँच की चूड़ियों का प्रचार हो गया था। लाख की चूड़ियाँ कोई पसंद नहीं करता इसलिए बदलू का काम बंद हो गया था। (3) आज के समय में लगभग सभी काम मशीन के द्वारा ही किए जाते हैं। यही कारण है कि बदलू ने आज के युग को मशीनी युग कहा है। (4) मशीन से बनी हुई काँच की चूड़ियों का प्रचार गाँव में होना और स्त्रियों द्वारा उन्हें अधिक पसंद किया जाना ही बदलू के काम के बंद होने का कारण था।

11. नाजुक तो फिर होता ही है लला! कहते-कहते उसे खाँसी आ गई और वह देर तक खाँसता रहा।

मुझे लगा उसे दमा है। अवस्था के साथ-साथ उसका शरीर ढल चुका था। उसके हाथों पर और माथे पर नसें उभर आईं थीं।

जाने कैसे उसने मेरी शंका भाँप ली और बोला, ''दमा नहीं है मुझे। फसली खाँसी है। यही महीने-दो-महीने से आ रही है। दस-पन्द्रह दिन में ठीक हो जाएगी।''

मैं चुप रहा। मुझ लगा उसके अंदर कोई बहुत बड़ी व्यथा छिपी है। मैं देर तक सोचता रहा कि इस मशीन युग में कितने हाथ काट दिए हैं। कुछ देर फिर शांति रही जो मुझे अच्छी नहीं लगी। (पा.पु.पृ. 9)

कठिन-शब्दार्थ— दमा = श्वास की बीमारी, (इसमें बहुत खाँसी आती है)। अवस्था = आयु। ढल चुका = दुर्बल हो चुका। भाँप ली = जान ली। फसली = ऋतु बदलने से होने वाले रोग। व्यथा = दुख। मशीन युग = मशीनों का बहुत प्रयोग होना। हाथ काट देना = बेराजगार बना देना।

संदर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित कामतानाथ की कहानी 'लाख की चूड़ियाँ' से लिया गया है। इस अंश में लाख की चूड़ियाँ बनाने वाले बदलू के बेरोजगार हो जाने के कष्ट और उसकी ढलती उम्र का वर्णन हुआ है।

व्याख्या— बदलू बोला- सही कहते हो लला, काँच जल्दी टूटता है। परन्तु लेखक से बात करते हुए बदलू को खाँसी आने लगी और देर तक खाँसता रहा। लेखक को लगा कि उसे दमा की बीमारी हो गई थी। उसका शरीर भी उम्र बढ़ने के साथ कमजोर हो चला था। बदलू ने न जाने कैसे लेखक के मन में उठी शंका को जान लिया और कहने लगा कि उसे दमा का रोग नहीं था। ऋतु बदलने के कारण दो महीने से खाँसी आ रही थी। उसे लगता था कि खाँसी दस-पन्द्रह दिन में ठीक हो जाएगी। लेखक ने उसकी बात का कोई उत्तर नहीं दिया पर उसे लगा कि बदलू के मन में धंधा बंद हो जाने का बड़ा दुख था। वह बहुत देर तक सोचता रहा कि मशीनों के प्रचार से अनेक कारीगरों की रोटी-रोजी पर संकट आ गया था। इसके बाद दोनों देर तक चुप रहे परन्तु यह चुप्पी लेखक को अच्छी नहीं लग रही थी।

1. लेखक को ऐसा क्यों लगा कि बदलू को दमा का रोग था?
2. बदलू के शरीर की दशा कैसी हो चली थी?
3. बदलू ने अपनी खाँसी का क्या कारण बताया?
4. मशीन युग द्वारा हाथ काटे जाने का भावार्थ क्या है?

उत्तर — (1) बदलू बातें करते-करते अचानक देर तक खाँसता रहा। यही देखकर लेखक को लगा कि उसे दमा का रोग था। (2) आयु बढ़ने के कारण बदलू का शरीर ढल चला था उसके हाथों और माथे की नसें उभर आई थीं। (3) बदलू ने कहा कि उसे दमे से होने वाली खाँसी नहीं थी। वह तो ऋतु बदलने पर हो जाने वाली मामूली खाँसी थी। (4) 'मशीन युग द्वारा हाथ काटे जाने' का अर्थ है कि घरेलू उद्योग-धंधों में मशीनों के अत्यधिक प्रयोग से कारीगर बेकार होते जा रहे थे।

12. आम की फसल अब कैसी है, काका? कुछ देर पश्चात मैंने बात का विषय बदलते हुए पूछा।

'अच्छी है लला, बहुत अच्छी है, उसने लहककर उत्तर दिया और अंदर अपनी बेटी को आवाज़ दी, अरी रज्जो, लला के लिए आम तो ले आ। फिर मेरी ओर मुखातिब होकर बोला, माफ़ करना लला, तुम्हें आम खिलाना भूल गया था।

नहीं, नहीं काका आम तो इस साल बहुत खाए हैं।

वाह-वाह, बिना आम खिलाए कैसे जाने दूँगा तुमको?

मैं चुप हो गया। मुझे वे दिन याद हो आए जब वह मेरे लिए मलाई बचाकर रखता था। (पा.पु.पृ. 9, 10)

कठिन-शब्दार्थ — पश्चात = पीछे। लहककर = खुश होकर। मुखातिब होना = सामने आना। माफ़ = क्षमा।

संदर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'वसंत' भाग-3 में संकलित कामतानाथ लिखित कहानी 'लाख की चूड़ियाँ' से उद्धृत है। यहाँ लेखक आम की फसल के बारे में पूछ रहा है।

व्याख्या— लेखक चिन्तनीय विषय को बदलने की दृष्टि से पूछता है कि इस बार आम की फसल कैसी हुई? जबाव में बदलू प्रसन्न होकर कहता है इस बार बहुत अच्छी फसल हुई है लला। कहते-कहते उसने अपनी बेटी रज्जो को आवाज लगाई कि लला के लिए कुछ आम लेकर आओ। फिर लेखक की ओर देखते हुए कहा कि हाँ लला माफ करना मैं तुम्हें आम खिलाना तो भूल ही गया था। लेखक ने कहा कि काका मैंने इस बार बहुत आम खाए हैं। अब ना खा सकूँगा। लेकिन बदलू उसे बिना आम खिलाए न जाने की कह रहा था। लेखक को याद आया कि बदलू काका मेरे लिए मलाई बचाकर रखता था। लेखक को बदलू की गाय याद आ गई।

1. उचित गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।
2. लेखक ने विषय बदलते हुए क्या कहा?
3. बदलू ने किस बात पर लेखक से माफी माँगी?
4. लेखक को कौन से दिन याद आ गए?

उत्तर—(1) उपयुक्त शीर्षक- आम की फसल। (2) ''आम की फसल अब कैसी है, काका?'' लेखक ने विषय बदलते हुए कहा। (3) आम खिलाने की भूल जाने पर बदलू ने लेखक से माफी माँगी। (4) लेखक को वे दिन याद आ गए जब बदलू उसके लिए मलाई बचाकर रखता था।

13. गाय तो अच्छी है न काका? मैंने पूछा।

गाय कहाँ है, लला! दो साल हुए बेच दी। कहाँ से खिलाता?

इतने में रज्जो, उसकी बेटी, अंदर से एक डलिया में ढेर से आम ले आई।

यह तो बहुत हैं काका! इतने कहाँ खा पाऊँगा? मैंने कहा।

वाह-वाह! वह हँस पड़ा, शहरी ठहरे न! मैं तुम्हारी उमर का था तो इसके चौगुने आम एक बखत में खा जाता था।

आप लोगों की बात और है। मैंने उत्तर दिया।

अच्छा, बेटी, लला को चार-पाँच आम छाँटकर दो। सिंदूरी वाले देना। देखो लला कैसे हैं? इसी साल यह पेड़ तैयार हुआ है। (पा.पु.पृ. 10)

कठिन-शब्दार्थ — साल = वर्ष। ढेर-से = बहुत से। शहरी = शहर का रहने वाला। उमर = आयु। चौगुने = चार गुना। बखत = वक्त, समय, बार। सिंदूरी = सिंदूर रंग के।

संदर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'वसंत' भाग-3 में संकलित कामतानाथ द्वारा लिखित कहानी 'लाख की चूड़ियाँ' से उद्धृत है। यहाँ लेखक बदलू द्वारा आम खिलाने का वर्णन कर रहा है।

व्याख्या— लेखक को मलाई की याद आई तो उसने बदलू से गाय के बारे में पूछा तो बदलू दुखी होकर बोला- दो साल पहले ही मैंने गाय को बेच दिया। उसके चारे-दाने का इंतजाम कहाँ से करता? अभी बात चल ही रही थी कि रज्जो एक डलिया भरकर आम ले आई। इतने आम देखकर लेखक बोला- इतने अधिक आम मैं नहीं खा पाऊँगा। यह सुनकर बदलू ने हँसते हुए कहा- तुम शहर के रहने वाले ठहरे, तुमसे ये आम नहीं खाए जा सकेंगे। तुम्हारी आयु में तो मैं इनसे चार गुना आम खा जाता था। आपकी बात अलग है, लेखक ने कहा। बदलू ने कहा- बेटी जो इस साल नया पेड़ तैयार हुआ है, उसके चार-पाँच सिंदूरी आम छाँटकर लला को दे दो। खाकर बताओ लला इनका स्वाद कैसा है। कहते हुए बदलू ने लेखक से आम खाने का आग्रह किया।

1. उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए।
3. रज्जो कितने आम लाई?
2. बदलू ने गाय क्यों बेच दी?
4. रज्जो से कौन-से आम देने के लिए बदलू ने कहा?

उत्तर—(1) उचित शीर्षक- बदलू की गाय। (2) रोजगार छिन जाने, गाय को भोजन नहीं खिला पाने के कारण उसने गाय बेच दी। (3) रज्जो एक टोकरी में ढेर सारे आम लेकर आई। (4) रज्जो ने नए पेड़ के सिंदूरी आम देने को कहा।

14. रज्जो ने चार-पाँच आम अंजुली में लेकर मेरी ओर बढ़ा दिए। आम लेने के लिए मैंने हाथ बढ़ाया तो मेरी निगाह एक क्षण के लिए उसके हाथों पर ठिठक गई। गोरी-गोरी कलाइयों पर लाख की चूड़ियाँ बहुत ही फब रही थीं।

बदलू ने मेरी दृष्टि देख ली और बोल पड़ा, यही आखिरी जोड़ा बनाया था जमींदार साहब की बेटी के विवाह पर दस आने पैसे मुझको दे रहे थे। मैंने जोड़ा नहीं दिया। कहा, शहर से ले आओ।

मैंने आम ले लिए और खाकर थोड़ी देर पश्चात चला आया। मुझे प्रसन्नता हुई कि बदलू ने हारकर भी हार नहीं मानी थी। उसका व्यक्तित्व काँच की चूड़ियों जैसा न था कि आसानी से टूट जाए। (पा.पु.पृ. 10)

कठिन-शब्दार्थ— अंजुली = हथेली। निगाह = नजर, दृष्टि। ठिठकना = रुकना। फब = खिल। दस आने = 60 पैसे। प्रसन्नता = खुशी।

संदर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'वसंत' में संकलित 'कामतानाथ' की कहानी 'लाख की चूड़ियाँ' से लिया गया है। इस अंश में लेखक ने बदलू द्वारा बनाए गए सुहाग के अंतिम जोड़े की सुंदरता और बदलू के स्वाभिमानी स्वभाव के बारे में बताया है।

व्याख्या— जब लेखक ने बदलू से उसकी आम की फसल के बारे में पूछा तो बदलू को तुरंत ध्यान आ गया कि वह लेखक को पहले आम की फसल के समय आम खिलाया करता था। उसने अपनी बेटी रज्जो से मीठे-मीठे आम छाँट कर लाने को कहा। रज्जो ने अपनी अंजुली में चार-पाँच आम लेकर लेखक की ओर बढ़ा दिए। आम लेते समय लेखक की दृष्टि अचानक रज्जो की कलाइयों में पहनी गई लाख की चूड़ियों पर गई। ये चूड़ियाँ रज्जो की गोरी-गोरी कलाइयों में बहुत जँच रही थीं। लेखक तनिक देर तक उन्हें देखता रह गया। यह देख बदलू ने बताया कि वह उसके द्वारा

बनाया गया अंतिम जोड़ा था। जमींदार की बेटी के विवाह के लिए उसने बहुत रच-रच कर वह सुहाग का जोड़ा बनाया था। कंजूस जमींदार उसके केवल दस आने दे रहा था। स्वाभिमानी बदलू ने जोड़ा नहीं दिया। जमींदार से कहा कि वह सुहाग-जोड़ा बाजार से खरीद लाए। आम खाकर लेखक बड़े प्रसन्न मन से घर चला आया। उसे यह सोचकर बड़ी खुशी हो रही थी कि बदलू ने बेरोजगार होकर भी अपना स्वाभिमान नहीं त्यागा था। उसका मन काँच की चूड़ियों की तरह सहज ही टूट जाने वाला नहीं था। वह दृढ़ इच्छाशक्ति वाला व्यक्ति था।

1. रज्जो लेखक के लिए क्या लेकर आई थी?
2. लेखक की नजर रज्जो की कलाई पर क्यों ठिठक गई?
3. लाख की चूड़ियों के जोड़े के विषय में बदलू ने लेखक को क्या बताया ?
4. लेखक के अनुसार बदलू का व्यक्तित्व कैसा नहीं था?

उत्तर — (1) रज्जो लेखक के लिए आम लेकर आई थी। (2) रज्जो ने जब लेखक को आम देने के लिए अपने हाथ आगे बढ़ाए तब रज्जो की कलाई में लाख की बनी चूड़ियों के सुन्दर जोड़े को देखकर लेखक की नजर ठिठक गई। (3) बदलू ने लेखक को बताया कि यह उसके द्वारा बनाया गया लाख की चूड़ियों का अंतिम जोड़ा है जो उसने जमींदार साहब की बेटी के विवाह के अवसर पर बनाया था किन्तु उनके द्वारा दाम बहुत कम दिए जाने के कारण बदलू ने उन्हें नहीं बेचा। (4) लेखक के अनुसार बदलू का व्यक्तित्व काँच की चूड़ियों के समान कमजोर नहीं था जो आसानी से टूट जाए अर्थात बदलू विपरीत परिस्थितियों से हारकर भी अपना पैतृक व्यवसाय बदलने वालों में से नहीं था।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

कहानी से

प्रश्न 1. बचपन में लेखक अपने मामा के गाँव चाव से क्यों जाता था और बदलू को 'बदलू मामा' न कहकर 'बदलू काका' क्यों कहता था?

उत्तर– बचपन में लेखक अपने मामा के गाँव बहुत चाव से जाता था, क्योंकि उसे वहाँ रहने वाला बदलू मनिहार लाख की रंग-बिरंगी गोलियाँ देता था जो उसे बहुत अच्छी लगती थीं । वह बदलू को मामा न कहकर बदलू काका इसलिए कहता था क्योंकि उस गाँव के बच्चे बदलू को 'बदलू काका' कहकर सम्बोधित करते थे । लेखक भी ऐसा संबोधन इसलिए करता था क्योंकि छोटा होने के कारण उसके अंदर पर्याप्त समझ नहीं थी।

प्रश्न 2. वस्तु-विनिमय क्या है ? विनिमय की प्रचलित पद्धति क्या है ?

उत्तर– वस्तु-विनिमय वह पद्धति है जिसमें किसी वस्तु के बदले मनचाही वस्तु प्राप्त की जाती है । इस पद्धति में वस्तुओं के लेन-देन में पैसे की जगह वस्तु का प्रयोग किया जाता है । जैसे बदलू लाख की चूड़ियों के बदले अनाज या अन्य आवश्यकता का सामान लिया करता था। आज यह चलन नहीं है । आज पैसों के बदले वस्तुएँ खरीदी जाती हैं । इस पद्धति को मुद्रा विनिमय के नाम से जाना जाता है।

प्रश्न 3. मशीनी युग ने कितने हाथ काट दिए हैं । इस पंक्ति में लेखक ने किस व्यथा की ओर संकेत किया है?

उत्तर– 'मशीनी युग ने कितने हाथ काट दिए हैं'- इस पंक्ति के माध्यम से लेखक ने मशीनों के अंधाधुंध प्रयोग से बढ़ती बेरोजगारी की ओर संकेत किया है । केवल कुछ ही मशीनों द्वारा सैकड़ों मनुष्यों के बराबर काम हो जाता है । बेरोजगारी के कारण वे भुखमरी के शिकार हो जाते हैं । इतना ही नहीं इनके कारण अनेक छोटे उद्योग और पैतृक व्यवसाय नष्ट हो चुके हैं। लेखक ने कारीगरों की इसी व्यथा की ओर संकेत किया है ।

प्रश्न 4. बदलू के मन में ऐसी कौन-सी व्यथा थी जो लेखक से छिपी न रह सकी?

उत्तर– लाख की चूड़ियों के कुशल कारीगर बदलू का काम मशीनों के आने से छिन चुका था । वह असहाय और लाचार हो गया था। जिन काँच की चूड़ियों से उसे नफरत थी आज सब जगह उसे वही दिखाई पड़ रही थीं । अब हाथ की कारीगरी की अपेक्षा सुंदरता तथा चमक-दमक को महत्त्व दिया जाने लगा था । बदलू के मन की यह व्यथा लेखक से छिपी न रह सकी ।

प्रश्न 5. मशीनी युग से बदलू के जीवन में क्या बदलाव आया ?

उत्तर– मशीनी युग के कारण बदलू का काम छिन गया था । वह बेरोजगार हो गया था । उसे गरीबी का जीवन जीना पड़ रहा था । उसे अपनी गाय बेचनी पड़ी थी । वह कमजोर तथा वृद्ध हो गया था और बीमार तथा चिंतित रहने लगा था ।

कहानी से आगे

प्रश्न 1. आपने मेले-बाजार आदि में हाथ से बनी चीजों को बिकते देखा होगा । आपके मन में किसी चीज को बनाने की कला सीखने की इच्छा हुई हो और आपने कोई कारीगरी सीखने का प्रयास किया हो तो उसके विषय में लिखिए ।

उत्तर– मैंने मेले-बाजार आदि में हाथ से बने रंग-बिरंगे खिलौने, रंगीन मोमबत्तियाँ, हाथ के पंखे, जूट के सामान आदि बिकते देखे हैं । मैंने एक कारीगर से जूट से बने सामान बनाने की कला सीखी । आरंभ में इसमें सफाई नहीं आती, परंतु अभ्यास किया तो मैं जूट का सामान बनाने की कला में निपुण हो गया। बाद में मैं खुद सामान बनाकर बेचने लगा इससे मुझे अच्छी आमदनी हुई ।

प्रश्न 2. लाख की वस्तुओं का निर्माण भारत के किन-किन राज्यों में होता है ? लाख से चूड़ियों के अतिरिक्त क्या-क्या चीजें बनती हैं? ज्ञात कीजिए ।

उत्तर– लाख की वस्तुओं का निर्माण राजस्थान, कर्नाटक, उत्तर प्रदेश आदि राज्यों में होता है । लाख से चूड़ियों के अलावा खिलौने, सजावटी वस्तुएँ, आभूषण, मूर्तियाँ, चूड़ियाँ, मुहर तथा पैकिंग सील आदि बनाई जाती हैं ।

अनुमान और कल्पना

प्रश्न 1. घर में मेहमान के आने पर आप उसका अतिथि-सत्कार कैसे करेंगे ?

उत्तर– घर में मेहमान के आने पर मैं उनका अभिवादन कर उनका परिचय प्राप्त करूँगा और बैठक में पहुँचाकर उनके जलपान की व्यवस्था करूँगा । मैं उनके परिवार की कुशल-क्षेम पूछकर उनके आने का अभिप्राय पूछूँगा और घर के बड़ों को उनके आने की खबर दूँगा ।

प्रश्न 2. आपको छुट्टियों में किसके घर जाना सबसे अच्छा लगता है ? वहाँ की दिनचर्या अलग कैसे होती है ? लिखिए ।

उत्तर– मुझे छुट्टियों में अपने नाना-नानी के घर जाना अच्छा लगता है । वहाँ की दिनचर्या बहुत मस्ती भरी होती है । वहाँ स्कूल जाने की चिंता नहीं रहती इसलिए आराम से देर तक सोने को मिलता है । खाने-पीने के लिए कई तरह की चीजें मिलती हैं । नए-नए दोस्त बन जाते हैं । नानी तरह-तरह की कहानियाँ सुनाती हैं।

प्रश्न 3. मशीनी युग में अनेक परिवर्तन आए दिन होते रहते हैं । आप अपने आस-पास से इस प्रकार के किसी परिवर्तन का उदाहरण चुनिए और उसके बारे में लिखिए।

उत्तर– मशीनी युग में आए दिन अनेक परिवर्तन होते रहते हैं । इस परिवर्तन का एक अच्छा उदाहरण कृषि है । कुछ समय पहले तक खेती-बाड़ी का काम किसान हाथ से तथा जानवरों के द्वारा किया करते थे । लेकिन आज खेती संबंधी हर काम के लिए मशीनों का प्रयोग होने लगा है । इससे जहाँ एक ओर कृषि पैदावार में बढ़त हुई है वहीं दूसरी ओर कृषि कार्य में लगे मजदूरों की रोजी-रोटी छिन गई है। उन्हें आजीविका के लिए शहर की ओर पलायन करना पड़ा है ।

प्रश्न 4. बाज़ार में बिकने वाले सामानों के डिज़ाइनों में हमेशा परिवर्तन होता रहता है । आप इन परिवर्तनों को किस प्रकार देखते हैं ? आपस में चर्चा कीजिए ।

उत्तर– बाज़ार में अनेक प्रकार के सामान बिकते हैं । इनमें खाने-पीने के सामानों के अलावा पहनने-ओढ़ने तथा मनोरंजन के सामान भी होते हैं । इन सामानों के डिजाइनों में, विशेषकर कपड़ों के डिजाइनों में हमेशा परिवर्तन होता रहता है । ऐसा समाज की सोच, रुचि व फैशन आदि में आए परिवर्तन के कारण होता है ।

प्रश्न 5. हमारे खान-पान, रहन-सहन और कपड़ों में भी बदलाव आ रहा है । इस बदलाव के पक्ष-विपक्ष में बातचीत कीजिए और बातचीत के आधार पर लेख तैयार कीजिए ।

उत्तर– बदलाव प्रकृति का नियम है । बदलाव समय-समय पर होता रहता है- यद्यपि बड़े-बुजुर्ग इस बदलाव को देर से स्वीकार करते हैं परन्तु युवा पीढ़ी इसे तुरंत स्वीकार कर लेती है । बड़े लोग इसे फैशन का नाम देते हैं और आरंभ में इसका विरोध करते हैं परंतु आगे चलकर धीरे-धीरे इसे स्वीकार कर लेते हैं । जो लोग (बुजुर्ग) इस बदलाव को स्वीकार कर लेते हैं, वे युवाओं द्वारा स्वीकार्य होते हैं अर्थात युवा उनके सम्मुख अपनी समस्याओं को आसानी से रख देते हैं दूसरी ओर वे रूढ़िवादी और पिछड़ी सोच वाली बुजुर्ग पीढ़ी से जो उसके खान-पान, रहन-सहन पर बेवजह टीका-टिप्पणी करती है, बचना चाहते हैं।

भाषा की बात

प्रश्न 1.'बदलू को किसी बात से चिढ़ थी तो काँच की चूड़ियों से' और बदलू स्वयं कहता है– "जो सुंदरता काँच की चूड़ियों में होती है वह लाख में कहाँ संभव है ?" ये पंक्तियाँ बदलू की दो प्रकार की मनोदशाओं को सामने लाती हैं । दूसरी पंक्ति में उसके मन की पीड़ा है । उसमें व्यंग्य भी है । हारे हुए मन से, या दुखी मन से अथवा व्यंग्य में बोले गए वाक्यों के अर्थ सामान्य नहीं होते । कुछ व्यंग्य वाक्यों को ध्यानपूर्वक समझकर एकत्र कीजिए और उनके भीतरी अर्थ की व्याख्या करके लिखिए ।

उत्तर— (क) लाख की चूड़ियाँ पहने, तो मोच आ जाए।

अर्थ — लाख की चूड़ियाँ काँच की चूड़ियों से भारी होती हैं। बदलू का मानना है कि शहर की औरतों की कलाई बहुत नाजुक होती है इसलिए वह काँच की चूड़ियाँ पहनती हैं क्योंकि लाख की चूड़ियों से उनकी कलाई में मोच आ सकती है। यद्यपि ऐसा संभव नहीं है क्योंकि लाख की चूड़ियाँ इतनी भी भारी नहीं होतीं कि कलाई में मोच आ जाए।

(ख) गाय कहाँ है लला! दो साल हुए बेच दी। कहाँ से खिलाता।

अर्थ— लेखक के मामा के गाँव में काँच की चूड़ियों का प्रचार हो जाने के कारण बदलू का पैतृक व्यवसाय पूरी तरह से बंद हो गया। उसकी आर्थिक स्थिति बहुत खराब हो गई, जिसके कारण उसे अपनी गाय बेचनी पड़ी। 'कहाँ से खिलाता' में बदलू ने बदली हुई परिस्थिति पर व्यंग्य किया है।

प्रश्न 2. 'बदलू' कहानी की दृष्टि से 'पात्र' है और भाषा की बात (व्याकरण) की दृष्टि से संज्ञा है। किसी भी व्यक्ति, स्थान, वस्तु, विचार अथवा भाव को संज्ञा कहते हैं। संज्ञा को तीन भेदों में बाँटा गया है (क) व्यक्तिवाचक संज्ञा, जैसे — लला, रज्जो, आम, काँच, गाय इत्यादि (ख) जातिवाचक संज्ञा, जैसे — चरित्र, स्वभाव, वजन, आकार आदि द्वारा जानी जाने वाली संज्ञा। (ग) भाववाचक संज्ञा, जैसे— सुंदरता, नाजुक, प्रसन्नता इत्यादि जिसमें कोई व्यक्ति नहीं है और न आकार या वजन। परंतु उसका अनुभव होता है। पाठ से तीनों प्रकार की संज्ञाएँ चुनकर लिखिए।

उत्तर— व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ—बदलू, जनार्दन, रज्जो, लाख, नीम आदि।

जातिवाचक संज्ञाएँ—आदमी, मामा, चूड़ियाँ, गाँव, बच्चे, मकान, गोलियाँ, वृक्ष, चौखट, सलाख, अजान, हुक्का, घरवाली, गाय, आम, स्कूल, दूध, मशीन, लड़की, शहर, जमींदार, लला, मचिया आदि।

भाववाचक संज्ञाएँ—कसर, चिढ़, खातिर, गर्मी, पढ़ाई, रुचि, जिद, प्रसन्नता, सुंदरता, मोच, व्यक्तित्व आदि।

प्रश्न 3. गाँव की बोली में कई शब्दों के उच्चारण बदल जाते हैं। कहानी में बदलू वक्त (समय) को बखत, उम्र (वय/आयु) को उमर कहता है। इस तरह के अन्य शब्दों को खोजिए जिनके रूप में परिवर्तन हुआ हो, अर्थ में नहीं।

उत्तर—मर्द = मरद, भाई = भइया, ग्राम = गाँव, अंजलि = अंजुलि, शलाका = सलाख, सौभाग्य = सुहाग।

3 बस की यात्रा

• हरिशंकर परसाई

गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्याएँ एवं अर्थग्रहण संबंधी प्रश्नोत्तर

1. हम पाँच मित्रों ने तय किया कि शाम चार बजे की बस से चलें। पन्ना से इसी कंपनी की बस सतना के लिए घंटे भर बाद मिलती है जो जबलपुर की ट्रेन मिला देती है। सुबह घर पहुँच जाएँगे। हम में से दो को सुबह काम पर हाजिर होना था इसीलिए वापसी का यही रास्ता अपनाना जरूरी था। लोगों ने सलाह दी कि समझदार आदमी इस शाम वाली बस से सफ़र नहीं करते। क्या रास्ते में डाकू मिलते हैं? नहीं, बस डाकिन है। (पा.पु.पृ. 13)

कठिन-शब्दार्थ—तय करना = निश्चित करना। हाजिर = उपस्थित। जरूरी = आवश्यक। सफर = यात्रा।

संदर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'वसंत' में संकलित हरिशंकर परसाई की कहानी 'बस की यात्रा' से लिया गया है। इस अंश में लेखक ने शाम चार बजे की बस से पन्ना जाने के विषय में बताया है।

व्याख्या— लेखक को अपने चार मित्रों के साथ शाम चार बजे की बस से पन्ना पहुँचना था। पन्ना में उन्हें इसी बस कंपनी की गाड़ी मिलती जो उन्हें सतना पहुँचा देती। यह गाड़ी पन्ना में एक घण्टे बाद मिलती थी। इस गाड़ी से उनको जबलपुर जाने वाली ट्रेन मिल सकती थी। ये लोग सुबह घर पहुँचना चाहते थे क्योंकि इन मित्रों में से दो को सबेरे काम पर जाना था। सुबह पहुँचने के लिए और कोई दूसरा रास्ता नहीं था। जब उन्होंने इस बारे में लोगों से पूछा तो लोगों ने उन्हें बताया कि कोई भी समझदार आदमी उस शाम वाली बस से यात्रा नहीं करता था। लेखक ने लोगों से पूछा कि क्या रास्ते में डाकुओं के हमले का भय था? लोगों ने व्यंग्य करते हुए बताया कि बस ही डाकिनी के समान थी अर्थात् बस कहीं भी, कभी भी रास्ते में खराब हो सकती थी। इससे यात्री घोर संकट में फँस जाते थे।

1. लेखक और उसके मित्रों ने कितने बजे की बस से जाने का निश्चय किया?
2. लेखक और उसके मित्रों को कहाँ पहुँचना था? इसके लिए उन्होंने किस साधन से जाने का निश्चय किया?
3. वापसी के लिए लेखक और उसके साथियों ने क्या रास्ता अपनाने का विचार किया?
4. लोगों ने लेखक एवं उसके साथियों को क्या सलाह दी?

उत्तर— (1) लेखक और मित्रों ने शाम चार बजे की बस से जाने का निश्चय किया। (2) लेखक व उसके मित्रों को अपने घर पहुँचना था। इसके लिए उन्होंने शाम चार बजे वाली कंपनी की बस से जाने का निश्चय किया। (3) वापसी के लिए लेखक और उसके साथियों ने पन्ना से शाम को चार बजे चलने वाली बस से सतना पहुँचकर वहाँ से जबलपुर की ट्रेन पकड़ने का विचार किया। (4) लोगों को शाम को चलने वाली बस की दुर्गति के बारे में पता था इसलिए उन लोगों ने लेखक व उसके साथियों को उस बस से सफ़र न करने की सलाह दी।

2. बस को देखा तो श्रद्धा उमड़ पड़ी। खूब वयोवृद्ध थी। सदियों के अनुभव के निशान लिए हुए थी। लोग इसलिए इससे सफ़र नहीं करना चाहते कि वृद्धावस्था में इसे कष्ट होगा। यह बस पूजा के योग्य थी। उस पर सवार कैसे हुआ जा सकता है! (पा.पु.पृ-13)

कठिन-शब्दार्थ—श्रद्धा = सम्मान की भावना। खूब = बहुत। वयोवृद्ध = बहुत बूढ़ी। सदियाँ = सैकड़ों साल। अनुभव = तजुर्बा। वृद्धावस्था = बुढ़ापा। कष्ट = तकलीफ, दु:ख। योग्य = लायक।

संदर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'वसंत' में संकलित 'बस की यात्रा' नामक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक 'हरिशंकर परसाई' हैं। लेख व्यंग्यपूर्ण भाषा शैली में बस की जीर्ण-शीर्ण दशा का वर्णन कर रहा है।